श्रद्धेय डा. विश्वामित्र जी महाराज के मुखारविन्द से.....
लदरौर (हिमाचल प्रदेश) २५ फरवरी,२००२ अपराह्न २.३० बजे

राम अर्थात जिसमें सब रमते हैं, जो सब में रमता है, कण कण में जो व्याप्त है। भगवान् शिव जिसका सतत् स्मरण करते हुए, समाधिष्ठ रहते हैं। वह राम, जो सूर्य को प्रकाश देता है, जो अग्नि को जलाने की शक्ति देता है, जो चन्द्रमा को ज्योत्सना प्रदान करता है, जो हम सबको जीवन देता है, जिसके बिना हम शव हैं। इसी राम की, हम उपासना करते हैं।

आप सोचोगे, अब हमने राम नाम ले लिया है, जपना शुरू कर दिया है, अब हमारे ऊपर, कोई रोग नहीं आएगा, घर में, कोई दुर्घटना नहीं घटेगी। ऐसा आश्वासन मैं बिल्कुल नहीं देता। यह तो सब होता रहेगा। कल को आप कहो, नाम भी जपते हैं हम और हमें व्यापार में घाटा भी पड़ रहा है। यह तो प्रारब्ध के खेल हैं। परमात्मा का अकाट्य सिद्धान्त है, जो बोया है उसे काटना पड़ेगा। राम नाम, आप को बलवान बनाता है। हमारे ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है तब भी, हमारे मुख से, राम नाम न छूटे। यह, राम नाम का प्रताप है।

एक व्रद्धा गावं में रहती थी। छोटी आयु में, विधवा हो गई, दो पुत्र। कोई रोटी रोज़ी का साधन नहीं था। स्वयं मेहनत करके बच्चों को पढ़ाया लिखाया। उनका विवाह किया। पुत्र नालायक़ निकले, यह तो अपने प्रारब्ध की बात है, इसमें राम नाम का कोई दोष नहीं है। वृद्धा कहती है। कि यह मेरे कर्मा का खेल है । एक धर जमाई बन गया है, एक कहीं दूर जा कर नौकरी करने लग गया है। यह राम नाम का प्रताप है कि वृद्धा दुखी नहीं है बिल्कुल, प्रसन्न है। अभी भी अपने हाथ से काम करती है। बड़ी उदार ह्रदय है वह माँ। गाँव के लोग, उसे बड़ी अम्मा कहते है। छोटा बच्चा मिलता है, पाँव छूता है, उसे भरपूर खुशी से आर्शीवाद देती है। नहीं देखती कि मेरे शत्रु का पोता है या मित्र का पोता है, सिर पर हाथ फेरती है। कोई रोगी होता गावं में, और कोई जाए न जाए लेकिन यह वृद्धा उस घर में ज़रूर जाती। सिर पर हाथ फेरती है, और कहती है रोग अथ्रात् एक पाप कर्म कट रहा है। क्यों घबराते हो? दवाई के साथ यह राम नाम की औषध भी लो। 'एक छोटी सी माला उनके हाथ में पकड़ा देती। 'जितनी देर मैं बैठती हूँ, मैं भी राम राम जपती हूँ तू भी राम राम जप।'

वृद्धा की सेवा, सिमरन देखकर, भगवान श्री प्रसन्न हुए हैं। 'प्रभु ने दर्शन दिए, जीवन सफल हो गया। जिसे पाने के लिए हमने जन्म लिया है उसे वृद्धा ने पा लिया। भगवान ने कहा, ' देवी ! कोई वरदान माँगो।' वृद्धा हाथ जोड़ कर कहती हैं, 'महाराज! मुझे यह दीजिएगा कि अंतिम श्वास तक, मैं इस गाँव की सेवा करती रहूँ।' वृद्धा सुबह उठने वाली हैं। क्या देखती है आज। तकिये के पास, एक बहुत बड़ा आम पड़ा हुआ है। समझ गई, प्रभु प्रसाद देकर गए हैं। भगवान को भोग लगाया है स्वयं भी खाया है। इधर उधर बाँटा भी है। गुठली बची है, उसे अपने आँगन में लगा दिया है। बहुत जल्दी विशाल पेड़ बन गया। बहुत आम लगने लग गए। आते जाते को आम देती है। 'लो बेटा ! परमात्मा का प्रसाद है, राम राम जपो।'

वृद्धा बड़ी प्रसिद्ध हो गई है। राजा साहब के पास खबर पहुँची। आम बाँटती है, उसका आम खाके उसका स्वाद, कोई ज़िन्दगी भर भूलता नहीं है। राजा सुन कर बड़ा ईर्ष्यालु हुआ। दो सिपाहियों को भेजा, जाओ, उसका आम का पेड़ कटवा दो। वृद्धा ने उन्हें एक-एक आम दिया, 'लो बेटा ! आम चूस लो।' आम खाया, मानो राम नाम की मस्ती चढ़ गई। पेड़ काटना भूल गए। जाकर सेनापति को कहा कि एक बार आप भी आम खाकर देखो। सेनापति को भी वृद्धा ने आम दिया, वह भी पेड़ काटना भूल गया। बात राजा साहब के पास पहुँची। आज राजा साहब स्वयं आ गए हैं। राजा हो, भिखारी हो, ग़रीब हो, अमीर हो, वृद्धा के लिए सब बराबर हैं, 'आओ बेटा ! आम चूसो।' राजा ने आम चूसा तो यही कहा, 'अम्मा ! ऐसा आम मैंने ज़िन्दगी में कभी नहीं चूसा।' वृद्धा ने दस बारह आम लाकर राजा साहब को दे दिए, 'ले बेटा ! अपने घर ले जाना। गुठलीयां अपने राज्य की सड़कों पर लगवा देना, उद्यान में लगा देना।' आया तो था, ईर्ष्यालु, द्वेष करने वाला, अभिमानी राजा, सज़ा देने के लिए, पेड़ काटने के लिए लेकिन गया है, वहाँ से, हाथ जोड़ता हुआ, माँ के चरणों को हाथ लगाता हुआ, बिलकुल विनम्र हो कर यह, राम नाम का प्रताप है।

राम ही हमारा मंत्र है। स्वामी जी महाराज ने इस मंत्र को छुपाया नहीं है। डट के कहिएगा हम राम राम जपते हैं। एक मंत्र जिसे ग़रीब भी जप सकता है, अनपड भी जप सकता है, विद्वान भी जप सकता है, जिसे शराबी भी जप सकता है, मांस खाने वाला भी जप सकता है, पापी भी जप सकता है, और एक पुण्यात्मा भी जप सकता है।

राम नाम कैसे जपा जाता है? राम नाम पर, ध्यान किस प्रकार से, लगाया जाता है? इस विधि को ही, 'दीक्षा' कहा जाता है। पता नहीं, दीक्षा देते वक्त, क्या देना होगा हमें? क्या हमसे माँगेंगे? क्या हमसे छुडवायेंगें? यह सब बातें स्वामी जी महाराज की पद्धति में नहीं है। स्वामी जी महाराज से, किसी ने प्रश्न कर दिया, 'गुरु मंत्र देता है तो शिष्य गुरु दक्षिणा देता है। जब तक यह न किया जाए गुरु शिष्य परम्परा पूरी नहीं होती।' स्वामी जी महाराज कहते हैं, ' भाई ! मैंने भी गुरु दक्षिणा ली है। याद करो, जिस वक्त राम मंत्र आप को दिया गया था, आपसे पूछा गया था, भाई ! आप राम राम जपते रहोगे, छोड़ोगे तो नहीं? आपने, हाँ कही थी। आपने वायदा किया है, आप राम राम जपते रहोगे, यही, हमारी गुरु दक्षिणा है ' अच्छा लगे, उचित लगे तो राम राम जपिएगा, राम राम जपते रहिएगा। स्वामी जी महाराज की साधना ही यही है -

'मुख से जपिए राम राम, और हाथ से करिए काम'